भगवान दत्तात्रेय

भूमिका

बहुतांश उपासकोंको दत्तात्रेयदेवता सम्बन्धी जो थोडी-बहुत जानकारी रहती है, वह अधिकतर पढी-सुनी कथाओंसे होती है । ऐसी अल्प जानकारीके कारण दत्त भगवानपर उनका विश्वास भी अल्प ही होता है । दत्त भगवानकी जानकारी जितनी अधिक, उतना अधिक विश्वास निर्माण होनेमें सहायता मिलती है और साधना भी उचित ढंगसे होती है । आध्यात्मिक उन्नतिके लिए जीवको 'पिण्डसे ब्रह्माण्ड'तककी यात्रा पूर्ण करनी पडती है । इसका अर्थ है कि जो तत्त्व 'ब्रह्माण्ड'में अर्थात शिवमें हैं, उनका 'पिण्ड'में अर्थात जीवमें उतरना आवश्यक है । पानीकी बूंदमें तेलका जरासा भी अंश हो, तो वह पानीसे एकरूप नहीं हो सकता; उसी प्रकार जबतक दत्तभक्त दत्तकी सर्व विशेषताओं को आत्मसात् नहीं कर लेता, तबतक वह दत्तसे एकरूप नहीं हो सकता, अर्थात उसकी सायुज्य मुक्ति नहीं हो सकती । इसलिए इस ग्रन्थमें दत्तात्रेय देवताके विषयमें सामान्यरूपसे अन्यत्र न मिलनेवाली; परन्तु उपयुक्त अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी अन्तर्भूत की है - दत्त, अवधूत, दिगंबर आदि नामोंका भावार्थ, दत्तद्वारा किए गए गुणगुरु तथा साधकद्वारा वैसे गुणगुरु करनेका महत्त्व, दत्तके कार्य एवं विशेषताएं, दत्तके परिवारका भावार्थ, मूर्तिविज्ञान, पितृदोषसे (पूर्वजोंकी अतृप्तिसे) रक्षा होने हेतु दत्तकी उपासना करनेकी आवश्यकता और वह कैसे करें इत्यादि ।

दत्तभक्तोंको एवं दत्तकी साम्प्रदायिक साधना करनेवालोंको यह अध्यात्मशास्त्रीय जानकारी निश्चित ही उपयुक्त सिद्ध होगी; परन्तु इस सन्दर्भमें साधारण व्यक्ति आगे दिया हुआ नियम ध्यानमें रखें । कुछ लोगोंको रामायण पढनेपर रामकी, गणपति अथर्वशीर्ष पढनेपर गणपतिकी, शिवलीलामृतका पाठ करनेपर शिवकी उपासना करनेकी इच्छा होती है । उसी प्रकार इस ग्रन्थमें दी जानकारी पढकर कुछ लोगोंको लग सकता है कि हमें भी तुरन्त दत्तात्रेय देवताकी उपासना आरम्भ करनी चाहिए । ऐसेमें ध्यान रहे कि

दत्त समान देवताकी उपासनासे सबकी आध्यात्मिक उन्नति शीघ्र नहीं होती; क्योंकि उनके लिए जिस देवताकी उपासना आवश्यक है, वही करनेसे अधिक लाभ होता है । अन्यथा अधिक साधना करनेपर भी बहुत ही अल्प प्रगति होती है । सामान्य मनुष्य नहीं जान सकता कि दत्त समान देवताकी उपासना आवश्यक है या नहीं । यह आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत पुरुष (सन्त अथवा गुरु) ही बता सकते हैं । इसलिए सामान्य जन केवल जानकारीके लिए इस ग्रन्थका पठन करें । दत्तकी अनुभूति पानेकी दृष्टिसे साधनाका पहला चरण है अपने कुलदेवताके नामका 'श्री... (कुलदेवी / कुलदेव के नामका चतुर्थीका प्रत्यय)... नमः' इस पद्धतिसे नामजप करें । साथ ही अतृप्त पूर्वजोंके कष्टसे रक्षा हेतु कष्टकी तीव्रतानुसार दत्तका २ से ६ घण्टे नामजप प्रतिदिन करें ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है, इस ग्रन्थको पढकर दत्त भगवानके प्रति दत्तभक्तोंकी श्रद्धा अधिक दृढ हो और अधिकाधिक साधना करनेकी प्रेरणा मिले । – **संकलनकर्ता**

('अध्यात्मशास्त्र' ग्रन्थमालाके सर्व खण्डोंकी संयुक्त भूमिका 'धर्मका मूलभूत विवेचन' ग्रन्थमें दी है ।)

नामजपसम्बन्धी मार्गदर्शन करनेवाला सनातनका ग्रन्थ !

नामजप कौनसा करें ?

- जनसामान्यके लिए 'ॐ'का जप कठिन क्यों ?
- साधनाके आरम्भमें कुलदेवताका नाम क्यों जपें ?
- प्रकृतिके अनुसार विविध देवताओंका नामजप कैसे करें ?
- नामजपका अर्थ समझकर नामजप करना अधिक उचित क्यों है ?

अनुक्रमणिका

[कुछ वैशिष्ट्यपूर्ण सूत्र (मुद्दे) '*' चिह्नसे दर्शाए हैं ।]

१. अर्थ २१

२. कुछ अन्य नाम (अवधूत, दिगंबर, श्रीपाद, वल्लभ) २१

३. जन्मका इतिहास २३

४. गुरुतत्त्व (दत्ततत्त्व) ये ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश ये तीन तत्त्व मिलकर निर्माण होना २८

५. दत्तके गुरु एवं उपगुरु २८

६. विशेषताएं ४०

* दत्तमें सगुण एवं निर्गुण तत्त्वोंकी मात्रा ४३

* तत्त्व, क्षमता एवं प्रकट शक्ति ४३

७. कार्य

७ अ. त्रेतायुगके पहले दत्तात्रेयका कार्य और त्रेतायुगके पश्चात सन्तपरम्पराका आरम्भ होना ४३

७ आ. तारक रूपके कार्य ४४

* पितरोंको गति देना और जीवको पितृऋणसे मुक्त होनेका अवसर देना ४४

* गुरुतत्त्वका कार्य ४४

७ इ. मारक रूपका कार्य ४७

* अनिष्ट पूर्वजोंको दण्डित करना ४८

* साधना ढंगसे न करनेवालेको दण्डित करना ४८

७ ई. ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश, इन त्रिदेवोंमेंसे जागृत तत्त्वके अनुसार दत्तका कार्य ४९

७ उ. अन्य कार्य ४९

८. अवतार ४९

९. परिवारका भावार्थ ५०
१०. दत्तात्रेयलोक ५२
११. मूर्तिविज्ञान ५३
* दत्तात्रेयके कुटुम्बवत्सल चित्ररूपका भावार्थ ५४
* दत्तात्रेयद्वारा धारण की गईं विविध वस्तुएं ५५
* दत्ततत्त्वसे संबंधित रंग, दत्तकी मूर्ति एवं दत्तकी पादुकाएं ६२
१२. सनातन-निर्मित दत्तात्रेयका सात्त्विक चित्र एवं नामजप-पट्टी ६३
१३. उपासना ४२
* दत्ततत्त्व आकर्षित एवं प्रक्षेपित करनेवाली कुछ रंगोलियां ६८
* दत्तकी उपासना अन्तर्गत कुछ सामान्य कृत्य ७०
* पादुका एवं औदुम्बर वृक्षकी पूजा ७२
* दत्तात्रेय देवताको करनेयोग्य कुछ प्रार्थनाएं ७५
* दत्तका नामजप, नामजपसे होनेवाले लाभ ७६
१४. पितरोंको गति प्राप्त करवानेवाला दत्तका जप / उपासना ८६
१५. दत्तात्रेयकी उपासनासे अनिष्ट शक्तियोंके कष्टसे रक्षा होना १००
१६. दत्तसम्प्रदाय (नाथसम्प्रदाय, महानुभावसम्प्रदाय आदि) १०१
१७. प्रमुख तीर्थक्षेत्र एवं उनकी विशेषताएं १०४
१८. प्रमुख ग्रन्थ (दत्तपुराण, अवधूतगीता, श्री गुरुचरित्र) १०७
१९. अनुभूतियां १०८

धर्मसम्बन्धी व्यापक दृष्टिकोण देनेवाले ग्रन्थ !

- धर्मका मूलभूत विवेचन
- धर्मका आचरण एवं रक्षण